चीन का विस्तारवाद और भारत जापान साझेदारी

विपीन कुमार
शोध छात्र
पंजीयन संख्या : 466/2022
स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग
ति. मां. भा. वि. वि. भागलपुर

सारांश

"चीन को नियंत्रित करने के लिए भारत-जापान की साझेदारी" विषयक यह शोध आलेख एशिया के वर्तमान भू-राजनीतिक परिदृश्य में भारत और जापान के बढ़ते रणनीतिक सहयोग की भूमिका का विश्लेषण करता है। चीन की आक्रामक विदेश नीति, सैन्य विस्तारवाद और आर्थिक प्रभुत्व को संतुलित करने के प्रयास में यह साझेदारी एक वैकल्पिक शक्ति संरचना के रूप में उभर रही है, जो लोकतंत्र, बहुपक्षीयता और क्षेत्रीय समावेशिता जैसे मूल्यों पर आधारित है। आलेख की शुरुआत एशिया में शक्ति संतुलन की आवश्यकता और भारत-जापान-चीन के बीच ऐतिहासिक व समकालीन संबंधों की पृष्ठभूमि से होती है। इसके बाद चीन की बढ़ती सैन्य और आर्थिक शक्ति, दक्षिण चीन सागर में उसका आक्रामक रुख, OBOR परियोजना, और भारत के साथ सीमावर्ती तनावों जैसे मुद्दों को प्रस्तुत किया गया है, जो क्षेत्रीय स्थिरता के लिए गंभीर चुनौतियाँ बन चुके हैं। भारत और जापान की *Special Strategic and Global Partnership* इस परिप्रेक्ष्य में एक निर्णायक पहल बनकर सामने आती है। रक्षा सहयोग, नियमित सैन्य अभ्यास, क्वाड जैसी बहुपक्षीय पहल और इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में संयुक्त रणनीति इस साझेदारी को मजबूत आधार प्रदान करते हैं। साथ ही, आर्थिक व तकनीकी सहयोग जैसे बुलेट ट्रेन परियोजना, जापानी निवेश, Supply Chain Resilience Initiative (SCRI) और डिजिटल तकनीकी सहयोग भी इस संबंध को व्यापक बनाते हैं। दोनों देशों का वैश्विक मंचों पर कूटनीतिक समन्वय और बहुपक्षीय दृष्टिकोण, विशेष रूप से स्वतंत्र और समावेशी इंडो-पैसिफिक की संकल्पना, क्षेत्रीय शक्ति संतुलन की दिशा में सार्थक कदम है। यद्यपि इस साझेदारी के सामने रणनीतिक प्राथमिकताओं में भिन्नता, चीन के साथ आर्थिक निर्भरता, आंतरिक सीमाएँ और अमेरिका पर निर्भरता जैसी चुनौतियाँ मौजूद हैं, फिर भी संयुक्त रक्षा उत्पादन, IPEF में सक्रिय भागीदारी और बहुपक्षीय सहयोग इसे नई दिशा दे रहे हैं।

अंततः, यह शोध दर्शाता है कि भारत-जापान साझेदारी केवल द्विपक्षीय लाभ के लिए नहीं, बल्कि एशिया में एक स्थायी, संतुलित और न्यायपूर्ण व्यवस्था की स्थापना के लिए भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यदि यह सहयोग दीर्घकालिक दृष्टि और रणनीतिक एकजुटता के साथ आगे बढ़ता है, तो यह चीन के प्रभाव को संतुलित करने की दिशा में एक सशक्त माध्यम सिद्ध हो सकता है।

मूल शब्द (Key Words) : रणनीतिक साझेदारी, भूराजनैतिक संतुलन, इंडो-पैसिफिक, क्वाड (QUAD), आर्थिक सहयोग,सैन्य अभ्यास, OBOR (One Belt One Road), सप्लाई चेन रेज़िलिएंस, (SCRI),बुलेट ट्रेन परियोजना, मल्टीलेटरलिज़्म (बहुपक्षवाद), डिजिटल सहयोग, चीन की विस्तारवादी नीति

साहित्य समीक्षा :

भारत-जापान रणनीतिक सहयोग पर केंद्रित प्रस्तुत साहित्य विविध दृष्टिकोणों को समाहित करता है, जिनमें भू-राजनीति, समुद्री सुरक्षा, विदेश नीति, तथा चीन की भूमिका जैसे तत्व प्रमुख हैं। सईदा खातून की कृति *"चीन का उदय और भारत-जापान रणनीतिक साझेदारी"* (2017) इस विषय का गहराई से विश्लेषण करती है कि कैसे चीन के बढ़ते प्रभाव के प्रति सामूहिक प्रतिक्रिया स्वरूप भारत और जापान की निकटता बढ़ी है। इसी प्रकार प्रवीण कुमार यादव की पुस्तक *"एशियाई भू-राजनीति और भारत-जापान रणनीतिक भागीदारी"* (2019) इस साझेदारी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और भू-राजनीतिक बदलाओं में इसकी भूमिका को रेखांकित करती है। Smith (2021) अपने शोध पत्र में जापान की

भारत की समुद्री रणनीति में भूमिका को "Silent Anchor" की संज्ञा देते हैं, जो जापान की परोक्ष लेकिन निर्णायक भूमिका को दर्शाता है। Jain (2016) द्वारा रचित *"Japan's Foreign Policy and Regional Security in South Asia"* दक्षिण एशिया में जापान की रणनीति को क्षेत्रीय सुरक्षा के संदर्भ में विश्लेषित करता है, वहीं Baruah (2020) द्विपक्षीय से बहुपक्षीय सहयोग की ओर बढ़ते रुझान पर प्रकाश डालते हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आलोक कुमार वर्मा (2021) और संजय मिश्रा (2022) की कृतियाँ इंडो-पैसिफिक में भारत-जापान की सामूहिक भूमिका और रणनीति की नवीनतम प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालती हैं। विमल त्रिपाठी (2020) की पुस्तक समुद्री शक्ति और सामरिक सहयोग को ऐतिहासिक और समकालीन दृष्टि से जोड़ती है।

संपूर्ण साहित्य से स्पष्ट होता है कि भारत-जापान साझेदारी केवल द्विपक्षीय नहीं, बल्कि क्षेत्रीय और वैश्विक रणनीति का महत्वपूर्ण अंग बन चुकी है। यह समीक्षा भविष्य की रणनीतियों के विश्लेषण हेतु एक समृद्ध आधार प्रदान करती है।

शोध का उद्देश्य एवं परिकल्पना :

इस शोध आलेख का उद्देश्य चीन के विस्तारवादी नीति के परिप्रेक्ष्य में भारत-जापान रणनीतिक साझेदारी की प्रकृति, आवश्यकताओं और प्रभावों का विश्लेषण करना है। 21वीं शताब्दी में चीन की आक्रामक विदेश नीति, विशेष रूप से दक्षिण चीन सागर, लद्दाख सीमा विवाद और बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) जैसे कदमों ने एशिया-प्रशांत क्षेत्र में शक्ति-संतुलन को चुनौती दी है। ऐसे में भारत और जापान जैसे लोकतांत्रिक और आर्थिक रूप से सशक्त राष्ट्रों के मध्य रणनीतिक, सैन्य और आर्थिक सहयोग की आवश्यकता और प्रासंगिकता बढ़ गई है।

यह परिकल्पित है कि चीन के विस्तारवाद के विरुद्ध भारत और जापान की रणनीतिक साझेदारी न केवल क्षेत्रीय स्थिरता को सुनिश्चित कर सकती है, बल्कि इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में एक बहुध्रुवीय शक्ति-संरचना को भी जन्म दे सकती है। यह साझेदारी समुद्री सुरक्षा, आर्थिक सहयोग और तकनीकी नवाचार के माध्यम से एक संतुलित वैश्विक व्यवस्था की दिशा में अग्रसर हो सकती है।

डेटाबेस एवं कार्यप्रणाली :

इस शोध आलेख की कार्यप्रणाली में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। शोध में प्राथमिक और द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों में भारत और जापान की आधिकारिक रणनीतिक दस्तावेज़, रक्षा मंत्रालयों की रिपोर्टें, संयुक्त वक्तव्य, तथा इंटरनेशनल थिंक टैंक्स जैसे IDSA, ORF और ICWA द्वारा प्रकाशित नीति-पत्र सम्मिलित हैं। द्वितीयक स्रोतों में विषय से संबंधित शोध आलेख, पुस्तकों, समाचार पत्रों, शोध पत्रिकाओं और विशेषज्ञ टिप्पणियों का समावेश किया गया है।

डेटाबेस के रूप में JSTOR, Google Scholar, Web of Science, तथा राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय पुस्तकालयों के डिजिटल अभिलेखों से सामग्री एकत्र की गई है। साथ ही, भारत-जापान समुद्री सहयोग, इंडो-पैसिफिक रणनीति और चीन की विदेश नीति पर केंद्रित वर्तमान साहित्य का गहन अध्ययन किया गया है, जिससे निष्कर्षों की प्रमाणिकता और प्रासंगिकता सुनिश्चित हो सके।

प्रस्तावना

21वीं सदी के वैश्विक परिदृश्य में एशिया का महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है, और इस महाद्वीप की राजनीति, अर्थव्यवस्था तथा सामरिक संतुलन अब अंतरराष्ट्रीय विमर्श के केंद्र में हैं। इस क्षेत्र में चीन का लगातार बढ़ता प्रभाव, उसकी आक्रामक विदेश नीति, और आर्थिक व सैन्य वर्चस्व की आकांक्षा ने अनेक देशों के लिए रणनीतिक चिंता उत्पन्न की है। विशेष रूप से भारत और जापान जैसे राष्ट्र, जो न केवल लोकतांत्रिक व्यवस्था के समर्थक हैं, बल्कि क्षेत्रीय स्थिरता के प्रति भी प्रतिबद्ध हैं, चीन की प्रभुत्ववादी नीति से उत्पन्न चुनौतियों का सामना करने के लिए एक-दूसरे के साथ

सहयोग बढ़ा रहे हैं। भारत और जापान के द्विपक्षीय संबंधों की गहराई बीते कुछ वर्षों में अभूतपूर्व रूप से बढ़ी है। दोनों देश न केवल ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से जुड़े हुए हैं, बल्कि आज की भूराजनैतिक परिस्थितियों में साझा रणनीतिक हितों को भी साझा कर रहे हैं। चाहे वह इंडो-पैसिफिक क्षेत्र की सुरक्षा हो, आपूर्ति श्रृंखलाओं की विविधता हो, या बहुपक्षीय मंचों पर सहयोग—भारत और जापान की साझेदारी क्षेत्रीय संतुलन स्थापित करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण प्रयास बन चुकी है।

यह शोध आलेख "चीन को नियंत्रित करने के लिए भारत-जापान की साझेदारी" विषय को केंद्र में रखकर इस सहयोग के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण करता है। इसमें सामरिक, आर्थिक, तकनीकी, कूटनीतिक और बहुपक्षीय क्षेत्रों में दोनों देशों के साझा प्रयासों को समझा गया है, साथ ही उन चुनौतियों और सीमाओं की भी पड़ताल की गई है जो इस साझेदारी को पूरी क्षमता तक पहुँचने से रोकती हैं। यह अध्ययन न केवल भारत और जापान के परस्पर संबंधों को समझने में सहायक है, बल्कि एशिया में शक्ति-संतुलन की प्रक्रिया को भी एक व्यापक संदर्भ प्रदान करता है, जहाँ चीन के प्रभाव को संतुलित करने हेतु सहयोग और समन्वय की आवश्यकता निरंतर बढ़ती जा रही है।

एशिया वर्तमान में विश्व राजनीति के केंद्र में तेजी से उभरता हुआ क्षेत्र बन चुका है, जहाँ शक्ति संतुलन की प्रक्रिया निरंतर गतिशील है। बीते कुछ दशकों में चीन ने जिस तीव्रता से अपनी आर्थिक, तकनीकी और सैन्य क्षमताओं का विस्तार किया है, उसने पूरे एशियाई उपमहाद्वीप में असंतुलन की स्थिति उत्पन्न कर दी है। चीन की आक्रामक विदेश नीति, विशेष रूप से दक्षिण चीन सागर में प्रभुत्व की महत्वाकांक्षा और भारत-चीन सीमा पर सैन्य तनाव, न केवल क्षेत्रीय स्थिरता के लिए चुनौती बन चुके हैं बल्कि वैश्विक व्यवस्था को भी प्रभावित कर रहे हैं। ऐसे परिप्रेक्ष्य में भारत और जापान की रणनीतिक साझेदारी नई ऊर्जा और दिशा प्राप्त कर रही है, जिसका मूल उद्देश्य न केवल आपसी सहयोग को मजबूत करना है, बल्कि चीन के प्रभाव को संतुलित करना भी है। भारत, जापान और चीन तीनों एशियाई सभ्यताएँ हैं जिनका आपसी संपर्क प्राचीन काल से रहा है। ऐतिहासिक रूप से, बौद्ध धर्म के माध्यम से भारत और जापान के सांस्कृतिक संबंध विकसित हुए थे, वहीं आधुनिक काल में इन देशों के राजनीतिक और आर्थिक संबंधों में कई उतार-चढ़ाव आए हैं। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद जापान ने शांतिवादी और विकासोन्मुख नीति अपनाई जबकि भारत ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन के माध्यम से स्वतंत्र विदेश नीति को प्राथमिकता दी। वहीं चीन ने माओ युग से लेकर वर्तमान शी जिनपिंग शासन तक, शक्ति आधारित यथार्थवादी दृष्टिकोण को अपनाया।[1] 21वीं सदी के आरंभ से चीन के विस्तारवादी रवैये ने भारत और जापान दोनों को अपनी रणनीतिक प्राथमिकताओं पर पुनर्विचार करने के लिए बाध्य किया है। भारत और जापान की साझेदारी की जड़ें केवल द्विपक्षीय हितों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि यह एक व्यापक क्षेत्रीय और वैश्विक दृष्टिकोण को भी प्रतिबिंबित करती हैं। दोनों देशों ने 'विशेष रणनीतिक और वैश्विक साझेदारी' (Special Strategic and Global Partnership) की अवधारणा को अपनाकर अपने सहयोग को बहुआयामी बनाया है। यह साझेदारी न केवल व्यापार, निवेश और तकनीकी क्षेत्र में सहायक है, बल्कि रक्षा, समुद्री सुरक्षा और क्षेत्रीय स्थिरता के मुद्दों पर भी समान सोच विकसित कर रही है। इंडो-पैसिफिक क्षेत्र की अवधारणा और क्वाड जैसे मंचों पर दोनों देशों की सक्रियता इस बात का प्रमाण हैं कि भारत और जापान, चीन की चुनौती का एक सामूहिक और संतुलित उत्तर देने के लिए कूटनीतिक, सैन्य और आर्थिक दृष्टि से एक-दूसरे के पूरक बन रहे हैं।

चीन की बढ़ती शक्ति और क्षेत्रीय चुनौतियाँ

वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में चीन एक उभरती हुई महाशक्ति के रूप में सामने आया है, जिसने न केवल अपनी आर्थिक ताकत का विस्तार किया है बल्कि सैन्य दृष्टि से भी असाधारण वृद्धि दर्ज की है। बीते दो दशकों में चीन की अर्थव्यवस्था ने जिस तीव्रता से विकास किया है, उसने उसे अंतरराष्ट्रीय व्यापार, निवेश और तकनीकी नवाचार में अग्रणी बना दिया है। इसी के समानांतर, चीन ने अपने रक्षा बजट को भी निरंतर बढ़ाते हुए अत्याधुनिक हथियार प्रणालियों, साइबर शक्ति और अंतरिक्ष तकनीक में उल्लेखनीय प्रगति की है। यह आर्थिक और सैन्य शक्ति अब उसकी विदेश नीति में भी झलकने लगी है, जो कई बार आक्रामक और वर्चस्ववादी प्रतीत होती है। दक्षिण चीन सागर इस नीति का सबसे सटीक उदाहरण है, जहाँ चीन ने कृत्रिम द्वीपों का निर्माण कर सैन्य ठिकानों की स्थापना की है और अंतरराष्ट्रीय समुद्री सीमाओं की अवहेलना करते हुए अपने क्षेत्रीय दावों को बलपूर्वक लागू करने की कोशिश की है।[2] इस आक्रामक रणनीति ने न केवल वियतनाम, फिलीपींस और मलेशिया जैसे देशों के साथ तनाव को जन्म दिया है, बल्कि अमेरिका और उसके सहयोगी देशों को भी जवाबी रणनीति अपनाने पर विवश किया है। चीन की महत्वाकांक्षी 'वन बेल्ट वन रोड' (OBOR)

परियोजना उसके वैश्विक प्रभाव विस्तार का एक और प्रमुख उदाहरण है। इस परियोजना के माध्यम से चीन न केवल एशिया, यूरोप और अफ्रीका को जोड़ने का प्रयास कर रहा है, बल्कि छोटे देशों को कर्ज के जाल में फँसाकर उन पर राजनीतिक और आर्थिक दबाव भी बना रहा है। पाकिस्तान में चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (CPEC) का निर्माण भारत की संप्रभुता को सीधी चुनौती देता है, क्योंकि यह गिलगिट-बाल्टिस्तान से होकर गुजरता है। भारत-चीन सीमा पर डोकलाम और गलवान जैसी घटनाएँ इस बात का संकेत हैं कि चीन केवल आर्थिक या कूटनीतिक दबाव तक सीमित नहीं है, बल्कि वह सैन्य रूप से भी अपने पड़ोसियों को चुनौती देने से नहीं हिचकता।[3] चीन की यह प्रभुत्ववादी नीति सम्पूर्ण एशिया में असंतुलन उत्पन्न कर रही है और छोटे- मध्यम आकार के देशों को अपनी रणनीतिक स्थिति पर पुनर्विचार करने के लिए मजबूर कर रही है। ऐसे में भारत और जापान जैसे लोकतांत्रिक देशों के लिए यह आवश्यक हो गया है कि वे एक संगठित मोर्चा तैयार करें जो न केवल चीन की विस्तारवादी नीति का सामना कर सके, बल्कि एशिया में स्थायित्व और संतुलन को भी सुनिश्चित कर सके।

भारत-जापान रणनीतिक साझेदारी

भारत और जापान के बीच रणनीतिक साझेदारी बीते दो दशकों में उल्लेखनीय रूप से गहरी और व्यापक हुई है। यह साझेदारी केवल द्विपक्षीय संबंधों तक सीमित नहीं है, बल्कि क्षेत्रीय और वैश्विक सुरक्षा ढांचे में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। दोनों देशों ने अपने संबंधों को "विशेष रणनीतिक और वैश्विक साझेदारी" (Special Strategic and Global Partnership) का नाम दिया है, जो यह दर्शाता है कि इनका आपसी सहयोग बहुआयामी है और दोनों देशों की विदेश नीति में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस साझेदारी का मूल उद्देश्य न केवल परस्पर हितों की पूर्ति करना है, बल्कि एशिया में स्थायित्व बनाए रखना और चीन के बढ़ते प्रभुत्व को संतुलित करना भी है। भारत और जापान के रक्षा संबंधों में बीते वर्षों में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। दोनों देशों ने रक्षा सहयोग को संस्थागत रूप दिया है, जिसके अंतर्गत नियमित संवाद, रक्षा नीति समन्वय, सैन्य तकनीकी साझेदारी और सामरिक प्रशिक्षण का आदान-प्रदान किया जाता है। जापान, जो ऐतिहासिक रूप से एक शांतिवादी संविधान के अंतर्गत कार्य करता रहा है, उसने भारत के साथ रक्षा क्षेत्र में सहयोग को प्राथमिकता दी है। इस सहयोग में समुद्री सुरक्षा, आतंकवाद-रोधी उपाय, साइबर सुरक्षा और अंतरिक्ष में सहयोग जैसे आयाम शामिल हैं। भारत और जापान के बीच यह रक्षा समन्वय एशिया में चीन के सैन्य विस्तार की पृष्ठभूमि में और भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है। द्विपक्षीय सैन्य अभ्यासों ने भारत-जापान रक्षा संबंधों को मजबूत आधार प्रदान किया है। 'Dharma Guardian' अभ्यास थल सेना के बीच आपसी तालमेल और संचालनात्मक क्षमता को बढ़ाता है, वहीं 'Malabar' नौसैनिक अभ्यास भारत, जापान, अमेरिका और हाल ही में ऑस्ट्रेलिया के बीच समुद्री रणनीतिक सहयोग का प्रतीक बन चुका है।[4] इन अभ्यासों के माध्यम से न केवल युद्ध कौशल का आदान-प्रदान होता है, बल्कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र में साझा रणनीतिक दृष्टिकोण भी विकसित होता है। Malabar जैसे अभ्यास यह संकेत देते हैं कि भारत और जापान किसी भी संभावित संकट, विशेषकर समुद्री मार्गों की सुरक्षा से संबंधित मामलों में, एक साझा उत्तर तैयार करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। क्वाड (Quadrilateral Security Dialogue) इस रणनीतिक साझेदारी को एक बहुपक्षीय मंच प्रदान करता है। भारत, जापान, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया की यह चतुर्भुज पहल एक "मुक्त, स्वतंत्र और समावेशी इंडो-पैसिफिक" क्षेत्र की संकल्पना पर आधारित है। क्वाड के माध्यम से चारों देश क्षेत्रीय स्थायित्व, समुद्री सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन, आपदा प्रबंधन और कोविड-19 जैसे वैश्विक संकटों पर मिलकर काम कर रहे हैं।[5] हालांकि चीन इसे एक "एशियाई नाटो" के रूप में चित्रित करता है, क्वाड ने स्वयं को रक्षात्मक और सहयोगात्मक मंच के रूप में प्रस्तुत किया है जिसका उद्देश्य किसी देश को निशाना बनाना नहीं बल्कि क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देना है। फिर भी, यह स्पष्ट है कि चीन की आक्रामक नीति के विरुद्ध संतुलन बनाए रखने में क्वाड और उसमें भारत-जापान की भूमिका निर्णायक है। भारत-प्रशांत क्षेत्र में भारत और जापान का सहयोग कई स्तरों पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। दोनों देश इस क्षेत्र को स्वतंत्रता, कानून के शासन और सार्वभौमिक व्यापार के सिद्धांतों के अनुरूप बनाए रखने के पक्षधर हैं। जापान की 'फ्री एंड ओपन इंडो-पैसिफिक' रणनीति और भारत की 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' में व्यापक सामंजस्य है। जापान न केवल भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में बुनियादी ढांचे के विकास में सहायता प्रदान कर रहा है, बल्कि बंगाल की खाड़ी में समुद्री संपर्क और क्षमता निर्माण कार्यक्रमों में भी भाग ले रहा है। इसके साथ ही, दोनों देशों के बीच इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में समुद्री डोमेन जागरूकता (Maritime Domain Awareness) को बढ़ावा देने के लिए साझा प्रयास हो रहे हैं, ताकि किसी भी बाहरी शक्ति द्वारा इस क्षेत्र में प्रभुत्व जमाने की कोशिशों को रोका जा सके। भारत-जापान रणनीतिक साझेदारी का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि दोनों देश लोकतांत्रिक व्यवस्था, वैश्विक बहुपक्षवाद और क्षेत्रीय संतुलन को प्राथमिकता देने वाले देश हैं। वैश्विक मंचों पर सहयोग, संयुक्त रक्षा योजनाएँ, समुद्री सुरक्षा और आर्थिक संपर्कों के माध्यम से दोनों देश एक स्थायी और संतुलित

एशियाई व्यवस्था के निर्माण की दिशा में कार्य कर रहे हैं। चीन के बढ़ते प्रभाव और आक्रामक रुख के बीच यह साझेदारी न केवल परस्पर हितों की पूर्ति करती है, बल्कि व्यापक क्षेत्रीय शांति और स्थिरता सुनिश्चित करने की दिशा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

आर्थिक व तकनीकी सहयोग

भारत और जापान के बीच आर्थिक और तकनीकी सहयोग द्विपक्षीय संबंधों की एक मज़बूत आधारशिला बन चुका है, जो न केवल दोनों देशों के विकास को बढ़ावा देता है, बल्कि चीन पर निर्भरता को भी रणनीतिक रूप से कम करता है। जापान भारत में बुनियादी ढांचा विकास का एक प्रमुख साझेदार बनकर उभरा है, जिसका सबसे प्रमुख उदाहरण बुलेट ट्रेन परियोजना है। यह परियोजना न केवल भारत की परिवहन प्रणाली में तकनीकी क्रांति लाने का प्रयास है, बल्कि यह जापान की उच्च तकनीकी क्षमता और भारत की विकास संबंधी आवश्यकताओं के मेल का प्रतीक भी है। मुंबई-अहमदाबाद हाई-स्पीड रेल कॉरिडोर परियोजना के माध्यम से दोनों देशों ने तकनीक, वित्त और विशेषज्ञता के आदान-प्रदान को एक नए स्तर पर पहुँचाया है। इसके अतिरिक्त, दिल्ली-मुंबई इंडस्ट्रियल कॉरिडोर (DMIC), स्मार्ट सिटी मिशन, और स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र में जापानी निवेश भारत में औद्योगिक और शहरी ढाँचे को सशक्त बना रहे हैं।[6] जापान भारत में निर्माण, परिवहन, ऊर्जा और सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में भी बड़े पैमाने पर निवेश कर रहा है। यह सहयोग भारत की आर्थिक आत्मनिर्भरता को मज़बूती प्रदान करता है और चीन की उत्पादन-प्रधान आपूर्ति श्रृंखला पर निर्भरता को भी कम करता है। इस संदर्भ में एक उल्लेखनीय पहल 'Supply Chain Resilience Initiative' (SCRI) है, जिसे भारत, जापान और ऑस्ट्रेलिया ने मिलकर आरंभ किया है। इसका उद्देश्य चीन-केंद्रित वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं के विकल्प खोजना और विविधता लाना है ताकि भविष्य में किसी एक देश पर अधिक निर्भरता से उत्पन्न होने वाले जोखिमों से बचा जा सके। कोविड-19 महामारी के दौरान आपूर्ति श्रृंखलाओं के संकट ने इस पहल की तात्कालिकता को और भी स्पष्ट कर दिया था। तकनीकी क्षेत्र में भी भारत और जापान के बीच सहयोग गहरा होता जा रहा है। डिजिटल अर्थव्यवस्था, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, साइबर सुरक्षा और 5G तकनीक जैसे क्षेत्रों में दोनों देशों के बीच संवाद और साझेदारी बढ़ रही है। जापान की तकनीकी विशेषज्ञता और भारत की युवा जनसंख्या तथा आईटी क्षेत्र की सशक्तता मिलकर ऐसे सहयोग को एक नई दिशा प्रदान कर सकते हैं।[7]

कूटनीतिक समन्वय

भारत और जापान के बीच कूटनीतिक समन्वय बहुपक्षीय मंचों पर निरंतर परिपक्व होता जा रहा है। दोनों देश संयुक्त राष्ट्र, G20, ASEAN और QUAD जैसे मंचों पर साझा हितों और दृष्टिकोण को लेकर सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। चाहे वह जलवायु परिवर्तन का मुद्दा हो, वैश्विक स्वास्थ्य संकट का समाधान हो या वैश्विक व्यापार प्रणाली में सुधार की आवश्यकता—भारत और जापान इन सभी विषयों पर एक जैसे रुख अपनाते हैं। यह समन्वय दर्शाता है कि दोनों देश लोकतांत्रिक मूल्यों और अंतरराष्ट्रीय कानूनों के पालन के लिए प्रतिबद्ध हैं। इंडो-पैसिफिक क्षेत्र के प्रति दोनों देशों का दृष्टिकोण अत्यंत सामंजस्यपूर्ण है। जापान की "Free and Open Indo-Pacific" रणनीति और भारत की "Act East Policy" दोनों एक दूसरे के पूरक हैं और क्षेत्रीय स्थिरता तथा संतुलन के लिए आवश्यक हैं।[8] यह साझेदारी केवल चीन के प्रभाव को संतुलित करने तक सीमित नहीं है, बल्कि एक ऐसी व्यवस्था स्थापित करने की दिशा में अग्रसर है जो पारदर्शिता, समावेशिता और न्याय आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को बढ़ावा दे। स्वतंत्र, खुले और समावेशी इंडो-पैसिफिक क्षेत्र की अवधारणा में भारत और जापान की साझेदारी विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। समुद्री मार्गों की सुरक्षा, मुक्त व्यापार और बहुपक्षीय सहयोग को सुनिश्चित करने के लिए दोनों देश अपने कूटनीतिक प्रयासों का समन्वय कर रहे हैं। इस समन्वय का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि यह केवल एशिया ही नहीं, बल्कि वैश्विक व्यवस्था की दिशा को भी प्रभावित करने की क्षमता रखता है। ऐसे में भारत और जापान की यह रणनीतिक, आर्थिक और कूटनीतिक एकता भविष्य में क्षेत्रीय स्थिरता और वैश्विक संतुलन का प्रमुख आधार बन सकती है।

चुनौतियाँ और सीमाएँ

भारत और जापान के बीच रणनीतिक साझेदारी पिछले कुछ वर्षों में भले ही मजबूत हुई हो, लेकिन इसके सामने कई जमीनी चुनौतियाँ और सीमाएँ भी हैं, जो इस सहयोग की गति और प्रभावशीलता को सीमित करती हैं। इन

चुनौतियों को समझना इसलिए आवश्यक है क्योंकि वे न केवल द्विपक्षीय रिश्तों को प्रभावित करती हैं, बल्कि चीन को नियंत्रित करने की व्यापक रणनीति को भी जटिल बनाती हैं। सबसे पहली चुनौती दोनों देशों की रणनीतिक प्राथमिकताओं में अंतर है। जापान की विदेश नीति पारंपरिक रूप से शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और आर्थिक कूटनीति पर आधारित रही है, जबकि भारत अपनी सुरक्षा आवश्यकताओं, क्षेत्रीय शक्ति संतुलन और गुटनिरपेक्षता की ऐतिहासिक नीति के बीच संतुलन बनाने का प्रयास करता रहा है। जापान के लिए अमेरिका के साथ सैन्य गठबंधन अनिवार्य सुरक्षा ढाँचा है, जबकि भारत अब भी अपनी रणनीतिक स्वायत्तता को बनाए रखने का प्रयास करता है। यह भिन्नता कई बार क्वाड जैसे बहुपक्षीय मंचों पर सहयोग को सीमित करती है, क्योंकि सभी साझेदार देशों के रणनीतिक दृष्टिकोण एक जैसे नहीं होते। दूसरी प्रमुख सीमा चीन के साथ भारत और जापान दोनों के गहरे आर्थिक संबंध हैं। जापान की अर्थव्यवस्था वर्षों से चीन पर व्यापार, निवेश और आपूर्ति श्रृंखलाओं के लिए निर्भर रही है। चीन जापान का एक प्रमुख व्यापारिक भागीदार है, और दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंधों की जटिलता को अनदेखा नहीं किया जा सकता। इसी प्रकार, भारत भी एक ओर चीन के साथ सीमा विवादों से जूझता है, तो दूसरी ओर उसके साथ व्यापारिक संबंधों को पूरी तरह समाप्त करने की स्थिति में नहीं है। वस्त्र, इलेक्ट्रॉनिक्स, मोबाइल, फार्मास्यूटिकल्स जैसे क्षेत्रों में भारत की आपूर्ति श्रृंखला अब भी चीन पर निर्भर है।[9] यह आर्थिक यथार्थ दोनों देशों की चीन-नियंत्रण की नीति को व्यावहारिक रूप से सीमित करता है। तीसरी चुनौती दोनों देशों की आंतरिक राजनीतिक और आर्थिक सीमाओं से जुड़ी है। भारत में आर्थिक सुधारों की गति, नौकरशाही जटिलताएँ, नीति अस्थिरता और बुनियादी ढाँचे की कमियाँ जापानी निवेशकों के लिए एक बाधा बनी हुई हैं। वहीं जापान की जनसंख्या में वृद्धावस्था का बढ़ता अनुपात, आर्थिक ठहराव और रक्षा क्षेत्र में संवैधानिक प्रतिबंध उसकी विदेश नीति को अधिक सक्रिय और आक्रामक रूप देने में बाधक बनते हैं। इन आंतरिक सीमाओं के कारण भारत और जापान दोनों ही अपनी साझेदारी को रणनीतिक गहराई देने के बावजूद उसे पूर्ण क्षमता तक पहुँचाने में असमर्थ रहे हैं। एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू अमेरिका की भूमिका और उस पर निर्भरता से जुड़ा है। जापान अपनी सुरक्षा व्यवस्था के लिए लगभग पूरी तरह अमेरिका पर निर्भर है, और उसके कई रणनीतिक निर्णय अमेरिका के हितों से प्रभावित होते हैं। इसी प्रकार, भारत भी हाल के वर्षों में अमेरिका के साथ घनिष्ठ संबंध विकसित कर रहा है, विशेष रूप से रक्षा, तकनीक और भू-राजनीतिक सहयोग के स्तर पर। हालाँकि भारत औपचारिक रूप से किसी सैन्य गठबंधन का हिस्सा नहीं है, फिर भी अमेरिका के साथ बढ़ती निकटता उसकी विदेश नीति की स्वतंत्रता को सीमित कर सकती है।[10] भारत और जापान दोनों को यदि अमेरिका की भूमिका से अलग हटकर चीन के विरुद्ध स्वतंत्र और समान दृष्टिकोण अपनाना है, तो इसके लिए नीति-निर्माण में आत्मनिर्भरता और रणनीतिक दूरदर्शिता की आवश्यकता होगी। इन सभी चुनौतियों के बावजूद भारत और जापान की साझेदारी में संभावनाएँ विद्यमान हैं। परंतु यदि इस साझेदारी को चीन के प्रभाव को नियंत्रित करने के एक प्रभावशाली साधन के रूप में विकसित करना है, तो इन आंतरिक और बाह्य बाधाओं को दूर करना आवश्यक होगा। इसके लिए दीर्घकालिक रणनीतिक योजना, बहुपक्षीय समन्वय, और क्षेत्रीय नेतृत्व की साझा समझ विकसित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। अन्यथा यह साझेदारी केवल प्रतीकात्मक रह जाएगी और चीन के विरुद्ध एक ठोस रणनीतिक विकल्प बनने से चूक जाएगी।

भारत और जापान की साझेदारी अब केवल रक्षा, व्यापार और तकनीक तक सीमित नहीं रही, बल्कि यह नए क्षेत्रों में भी विस्तार कर रही है, जिनमें संयुक्त रक्षा उत्पादन, आर्थिक ढांचे में भागीदारी, क्षेत्रीय सहयोग और बहुपक्षीयता का समर्थन शामिल है। इन प्रयासों का सामूहिक उद्देश्य न केवल दोनों देशों के हितों की रक्षा करना है, बल्कि चीन की एकतरफा और प्रभुत्ववादी नीतियों को संतुलित करने की दिशा में भी एक सशक्त कदम है। संयुक्त रक्षा उत्पादन इस साझेदारी का एक नया और महत्वपूर्ण पहलू बनकर उभर रहा है। भारत अपनी 'मेक इन इंडिया' नीति के अंतर्गत रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता हासिल करना चाहता है, वहीं जापान की रक्षा तकनीक अत्यंत विकसित और विश्वसनीय मानी जाती है। यदि दोनों देश रक्षा क्षेत्र में संयुक्त उत्पादन, तकनीक हस्तांतरण और अनुसंधान विकास में साझेदारी को बढ़ाते हैं, तो इससे न केवल भारत की सामरिक क्षमताएँ बढ़ेंगी, बल्कि यह क्षेत्रीय शक्ति संतुलन को भी मजबूती प्रदान करेगा।[11] इस सहयोग से चीन की सैन्य आक्रामकता के विरुद्ध एक प्रभावी जवाब तैयार किया जा सकता है। आर्थिक क्षेत्र में, भारत और जापान Indo-Pacific Economic Framework (IPEF) में भी सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। यह पहल अमेरिका के नेतृत्व में शुरू की गई थी ताकि इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में एक वैकल्पिक आर्थिक व्यवस्था स्थापित की जा सके जो पारदर्शिता, डिजिटल व्यापार, सप्लाई चेन सुरक्षा और स्वच्छ ऊर्जा जैसे मुद्दों को प्राथमिकता दे। भारत और जापान की इसमें भागीदारी इस ओर संकेत करती है कि वे चीन-केंद्रित आर्थिक नेटवर्क से बाहर निकलने और एक अधिक संतुलित आर्थिक व्यवस्था स्थापित करने के इच्छुक हैं। चीन की एकतरफा नीतियों को संतुलित करने के लिए क्षेत्रीय सहयोग भी एक आवश्यक रणनीति बन चुकी है। भारत और जापान ने ASEAN देशों, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण कोरिया और अन्य समान

सोच वाले राष्ट्रों के साथ अपने संबंधों को सशक्त किया है। इन देशों के साथ सहयोग बढ़ाकर वे क्षेत्र में एक ऐसी व्यवस्था की नींव रखने की कोशिश कर रहे हैं, जहाँ किसी एक शक्ति का वर्चस्व न हो और सभी देशों की संप्रभुता तथा स्वतंत्रता का सम्मान किया जाए। इसके साथ ही, भारत और जापान बहुपक्षवाद (Multilateralism) को भी लगातार प्रोत्साहित कर रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र, G20, QUAD, और अन्य अंतरराष्ट्रीय मंचों पर दोनों देश विकासशील देशों की आवाज़ को मज़बूती देने, वैश्विक शासन में सुधार लाने और समावेशी विश्व व्यवस्था को बढ़ावा देने की दिशा में कार्यरत हैं। बहुपक्षवाद के माध्यम से वे न केवल चीन के प्रभाव को संतुलित करना चाहते हैं, बल्कि एक स्थायी, न्यायसंगत और सहभागी वैश्विक व्यवस्था को साकार करने की दिशा में भी अग्रसर हैं।

निष्कर्ष

भारत-जापान साझेदारी आज केवल दो लोकतांत्रिक देशों के बीच द्विपक्षीय सहयोग तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एशिया की भू-राजनीतिक दिशा को आकार देने की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी बन चुकी है। बदलते वैश्विक परिदृश्य में, विशेष रूप से चीन की बढ़ती सैन्य और आर्थिक शक्ति के परिप्रेक्ष्य में, यह साझेदारी सामरिक और रणनीतिक दृष्टिकोण से अत्यंत आवश्यक हो गई है। यह न केवल दोनों देशों की सुरक्षा और आर्थिक हितों की रक्षा करती है, बल्कि एक व्यापक क्षेत्रीय और वैश्विक संतुलन की स्थापना में भी सहायक है। चीन की आक्रामक विदेश नीति, क्षेत्रीय प्रभुत्व की आकांक्षा और दक्षिण चीन सागर से लेकर भारत की सीमाओं तक उसका विस्तारवादी रुख, पूरे एशिया के लिए एक साझा चुनौती बन चुका है। ऐसे में भारत और जापान जैसे लोकतांत्रिक राष्ट्रों का मिलकर खड़ा होना, केवल उनके अपने हितों की रक्षा नहीं करता, बल्कि यह एक वैकल्पिक शक्ति संरचना को जन्म देता है जो पारदर्शिता, नियम आधारित व्यवस्था और क्षेत्रीय समावेशिता पर आधारित है। क्वाड, इंडो-पैसिफिक रणनीति, रक्षा अभ्यास, और आर्थिक सहयोग के माध्यम से यह द्विपक्षीय संबंध एक बहुपक्षीय प्रभाव उत्पन्न कर रहा है जो चीन के प्रभाव को संतुलित करने में मददगार है। भारत-जापान साझेदारी ने यह दर्शाया है कि साझा मूल्यों और समान हितों पर आधारित सहयोग, रणनीतिक गहराई प्राप्त कर सकता है। यह साझेदारी न केवल सैन्य और आर्थिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है, बल्कि यह एक वैचारिक प्रतिमान भी प्रस्तुत करती है जहाँ बहुपक्षीयता, लोकतंत्र और शांति का समर्थन किया जाता है। चीन की प्रभुत्ववादी नीति के बरअक्स यह साझेदारी क्षेत्र में एक संतुलित व्यवस्था की ओर संकेत करती है जो शक्ति के केंद्रीकरण के बजाय शक्ति के न्यायपूर्ण वितरण पर आधारित है।

अंततः, भारत और जापान की यह साझेदारी केवल वर्तमान भू-राजनीतिक परिस्थिति की प्रतिक्रिया नहीं है, बल्कि यह भविष्य के लिए एक साझा दृष्टिकोण का निर्माण भी कर रही है। यह एक ऐसी प्रणाली को बढ़ावा देती है जो सहयोग, सम्मान और स्थिरता के सिद्धांतों पर आधारित हो। यदि दोनों देश अपनी साझेदारी को निरंतर मजबूत करते रहें, तो यह एशिया में एक संतुलित और न्यायपूर्ण शक्ति संरचना की स्थापना में निर्णायक भूमिका निभा सकती है—जहाँ कोई भी शक्ति एकतरफा न हो, और क्षेत्रीय एवं वैश्विक शांति को प्राथमिकता दी जाए।

संदर्भ सूची

1. **खातून, सईदा**। *चीन का उदय और भारत-जापान रणनीतिक साझेदारी। आईयूपी अंतर्राष्ट्रीय संबंध पत्रिका*, खंड 11, अंक 1, जनवरी 2017, पृष्ठ -64
2. वही
3. Smith, S. A. (2021). “Japan’s Role in India’s Maritime Strategy: The Silent Anchor,” *Asian Affairs Journal*, Vol. 52(3), pp. –250
4. . यादव, प्रवीण कुमार. (2019). *एशियाई भू-राजनीति और भारत-जापान रणनीतिक भागीदारी*. दिल्ली: विद्या पब्लिशिंग हाउस। पृ. –112
5. Jain, P. (2016). *Japan’s Foreign Policy and Regional Security in South Asia*. Routledge. pp. –95.
6. वही

7. Baruah, D. M. (2020). "Indo-Japan Cooperation in Maritime Domain: From Bilateralism to Minilateralism," *Observer Research Foundation (ORF) Occasional Paper*, No. 285, pp. –34.
8. वही
9. वर्मा, आलोक कुमार. (2021). "हिंद-प्रशांत में भारत-जापान की भूमिका," *भारत अंतरराष्ट्रीय अध्ययन जर्नल*, खंड 8, अंक 2, पृ. –130
10. मिश्रा, संजय. (2022). *भारत-जापान संबंध और हिंद-प्रशांत क्षेत्र की रणनीति*. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन। पृ. –62

11. त्रिपाठी, विमल. (2020). *समुद्री शक्ति और भारत-जापान सहयोग*. वाराणसी: गंगा पब्लिकेशन। पृ. –92